वैभव लक्ष्मी व्रत
शांति, वैभव और लक्ष्मी प्राप्ति का
अद्भुत चमत्कारी प्राचीन
प्रकाशक:
साहित्य संगम • नाना चौटी गोपीपुरा सूरत

हे धन (वैभव) लक्ष्मी माँ । आपने जैसे शीला की मनोकामना पूर्ण
की वैसे सब की मनोकामना पूरी करना और सबका कल्याण करना ।

हिन्दी रु. ४.५० पैसे

श्री गणेशाय नमः ।

शुद्ध, सच्चा और शास्त्रीय विधि से करने का प्राचीन शीघ्र फलदायी व्रत, जिसका फल सच्चे भाव से करने पर अवश्य मिलता है।

वैभवलक्ष्मी व्रत

व्रत करने की शास्त्रीय विधि; व्रत पूरा होने पर उनका उद्यापन करने की शास्त्रीय विधि, व्रत की कथा, व्रत करते वक्त पालने के नियम, व्रत न फल दे तो उनकी वजह, लक्ष्मी स्तवन, श्री लक्ष्मी महिमा, श्री वैभवलक्ष्मी व्रत के सच्चे बने हुए किस्से, श्री यंत्र, श्री लक्ष्मीमाता की आठ स्वरूप की छवियाँ आरती, स्तुति वगैरह का एकमात्र संपूर्ण, सच्चा, प्राचीन और शीघ्र फलदायीं व्रन का पुस्तक।

कई पुस्तक वाले लिखते हैं कि सोने के गहने की पूजा की, मानो 'वैभवलक्ष्मी व्रत' पूरा हो गया। यह बात सरासर गलत है। सिर्फ यही पुस्तक में धनलक्ष्मी यानि कि वैभवलक्ष्मी की असली छवि भी पहली बार प्रकट की गई है। अगर सच्चे भाव से यह पुस्तक में दिखाई गई शास्त्रीय विधि अनुसार यह व्रत किया जाय और शास्त्रीय विधि अनुसार उनकी उद्यापन विधि की जाय तो यह व्रत का फल अवश्य मिलता है।

साहित्य संगम

बावासीदी, पंचोली शेरी के सामने, गोपीपुरा, सूरत

देश और परदेशमें वैभवलक्ष्मी व्रतका अद्भुत चमत्कार

वैभवलक्ष्मी व्रत अब नव भाषा में

माँ वैभव लक्ष्मीका शीघ्र फलदायी, असली और सच्चा व्रत ढुंढकर 'साहित्य संगम' सूरतने सरकार में रजिस्टर्ड करवाकर प्रकाशित किया है, जिनका कॉपीराईट नं. L ११६३६/८८ है ।

पूरे भारतमें और परदेशमें भी यह व्रतका अदभुत चमत्कारिक फळ वहुत से भाई-बहनोंको मिला है । मनवांच्छित फल देनेवाले यह व्रत पूरे भारतमें और परदेशमें भी कई भाईबहनें करते हैं । यह व्रत के लिये निम्नलिखित सूचनाएं खास तोरसे ध्यान में रखे ।

(१) नकली 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करनेसे कोई फल मिलता नहि है । अतः 'साहित्य संगम'-सूरत और कॉपीराईट न. L ११६३६/८८ देखकर बुक खरीदें ।

(२) वैभवलक्ष्मी व्रत गुजराती (रु. ४-५०), हिन्दी (रु. ४-५०), मराठी (रु.४-५०), कन्नड (रु. ५-००), वंगाली (रु. ५-००), तामिल (रु. ५-००), तेलुगु (रु. ५-००), मलयालम (रु. ५-००), और अंग्रेजी (रु. १०-००) इस तरह सभी मिलाकर नव भाषामें मिलती है।

(३) सामान्यतः हर परिवार में, हर साल शादी, परीक्षा, व्यापार, नौकरी, वीमारी, धनप्राप्ति, पुत्रप्राप्ति, वैवाहिक सुख, परिवारसुख, कोर्ट में सफलता, वगैरह विषयों में बहुत सी समस्याएं आती है । अतः मां वैभवलक्ष्मी की कृपा सदैव परिवार पर रहे और यह सब समस्याएं हल हो जाय इसलिये कई भाईबहनें हर साल नियमित रूपसे 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करतें हैं ।

(४) यह व्रत किसी भी धर्म के लोग कर सकते है ।

(५) उपहार में आई हुई पुस्तकें फिर से उपहार में नहि देनी चाहिये। उपहारमें आई हुई पुस्तक घरमें पवित्र स्थान पर रखनी चाहिये या जलाशयमें वहा देनी चाहिये।

(६) उपहार में ७,११,२१,५१ या कई भाविक १०१ बुक्स भी वांटते है । जितना मां वैभवलक्ष्मी का ज्यादा प्रचार होगा उतना ज्यादा फायदा होगा । पुस्तक वांटते वक्त मनमें 'जय माँ वैभवलक्ष्मी' वोलना चाहिये ।

(७) कई वक्त पहली वार व्रत फल नहि देता या कम फल देता है । किसीको दो वार, तीन वार या चौथी वार भी फल देता है । अतः पूरी श्रद्धा रखकर यह व्रत वारवार करना चाहिये ।

Printed & Published by Nanubhai Maganlal Naik Printed at Rekha Printery, Gopipura, Surat and Published From Sahitya Sangam, Gopipura, Surat (Guj.) - 395001

यह व्रत शीघ्र फलदायी है। किन्तु फल न दे तो तीन माह के बाद फिर से यह व्रत शुरु करना चाहिये। और जब तक मनवांछित फल न मिले तब तक यह व्रत तीन-तीन महीने पर करते रहना चाहिये। तो कभी भी इस का फल अवश्य मिलता ही है।

व्रत विधि शुरू करने से पहले की विधि

(१) 'श्री यंत्र' के सामने देख कर 'श्रीयंत्र को प्रणाम।' ऐसा बोलकर श्रीयंत्र को प्रणाम करें। (इस पुस्तक में 'श्रीयंत्र' की छवि दी हुई है।)

(२) बाद में लक्ष्मी जी के नीचे मुताबिक आठ स्वरूप की छवियाँ को प्रणाम करें। (१) धनलक्ष्मी एवं वैभवलक्ष्मी स्वरूप, (यह पुस्तक में पहले ही उन की चतुरंगी छवि दी है।) (२) श्री गजलक्ष्मी मां (३) श्री अधिलक्ष्मी मां (८) श्री विजयालक्ष्मी मां (५) श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी मां (६)श्री वीरलक्ष्मी मां (७) श्री धान्यलक्ष्मी मां (८) श्री संतान लक्ष्मी मां।

(3) बाद में नीचे दिया हुआ 'लक्ष्मी स्तवन' का पाठ करें।

गहने की पूजा करते वक्त बोलने का

लक्ष्मी स्तवन

श्लोक

या रक्ताम्बुजवासिनी विलसिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी।।
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती।।

लक्ष्मी स्तवन का हिन्दी में भावार्थ : जो लाल कमल में रहती है, जो अपूर्व कांतिवाली है, जो असह्य तेजवाली है, जो पूर्ण रूप से लाल है, जिसने रक्तरूप वस्त्र पहने हैं, जो भगवान विष्णु को अति प्रिय है, जो लक्ष्मी मन को आनंद देती है, जो समुद्रमंथन से प्रकट हुई है, जो विष्णु भगवान की पत्नी है, जो कमल से जन्मी है और जो अतिशय पूज्य है, वैसी हे लक्ष्मी देवी! आप मेरी रक्षा करें।

श्री गजलक्ष्मी माँ।
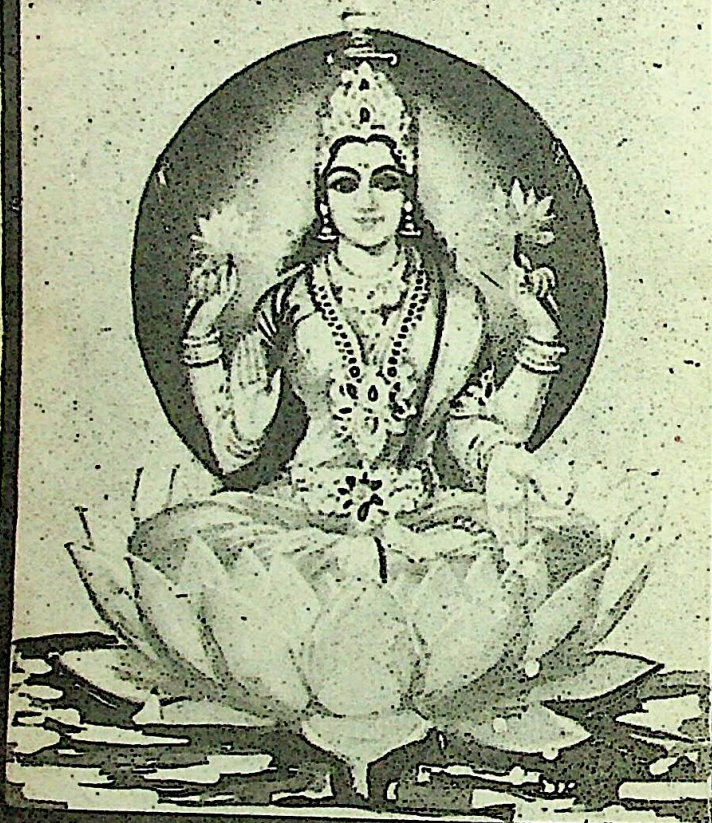
हे गजलक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री अधिलक्ष्मी माँ।

हे अधिलक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री विजयालक्ष्मी माँ।

हे विज्यालक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी माँ।

हे ऐश्वर्य लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री वीरलक्ष्मी माँ।

हे वीरलक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।
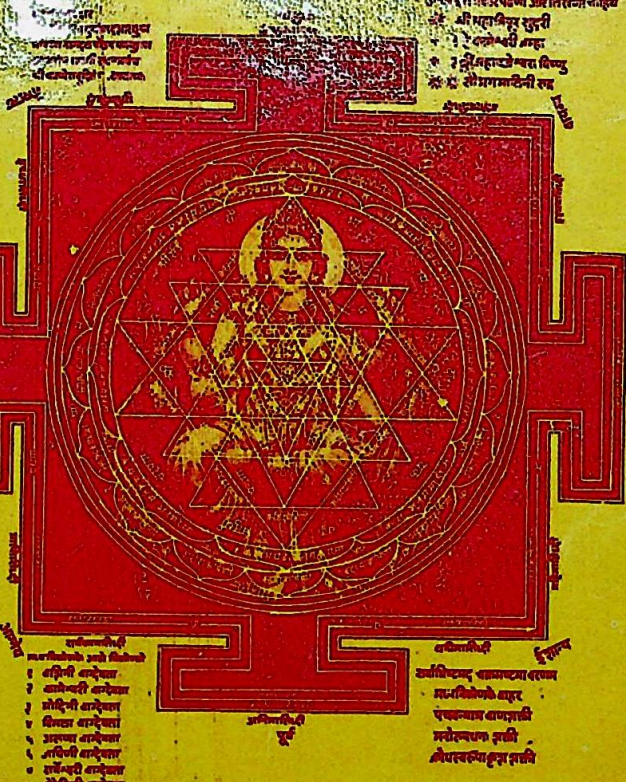
सुख, संपत्ति और शांति देनेवाला
श्री यंत्र
पूर्व
वैभवलक्ष्मी व्रत शुरू करने से पहले यह 'श्री यंत्र' को प्रणाम करके माथा टेकना चाहिये ।

श्री धान्यलक्ष्मी माँ।

हे धान्यलक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री संतानलक्ष्मी माँ
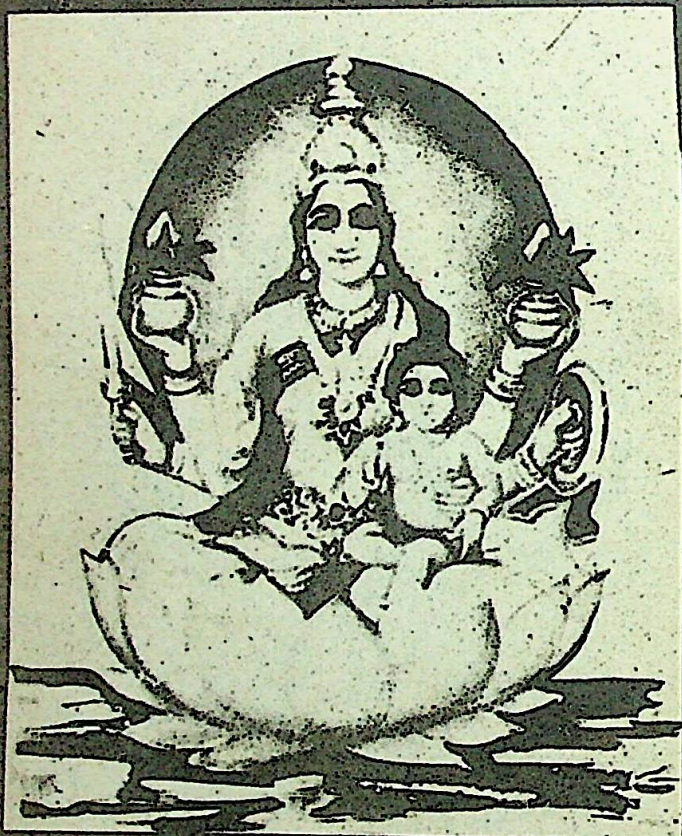
हे संतानलक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

वैभवलक्ष्मी व्रत करने का नियम

(१) यह व्रत सौभाग्यशाली स्त्रियां करें तो उनका अति उत्तम फल मिलता है। पर घर में यदि सौभाग्यशाली स्त्रियां न हों तो कोई भी स्त्री एवं कुमारिका भी यह व्रत कर सकती है।

(२) स्त्री के बदले पुरुष भी यह व्रत करें तो उसे भी उत्तम फल अवश्य मिलता है।

(३) यह व्रत पूरी श्रद्धा और पवित्र भाव से करना चाहिये। खिन्न होकर या बिना भाव से यह व्रत नहीं करना चाहिये।

(४) यह व्रत शुक्रवार को किया जाता है। व्रत शुरु करते वक्त ११ या २१ शुक्रवार की मन्नत रखनी पड़ती है। और पुस्तक में लिखी **शास्त्रीय विधि** अनुसार ही व्रत करना चाहिये। मन्नत के शुक्रवार पूरे होने पर **विधिपूर्वक** और इस पुस्तक में दिखाई गइ **शास्त्रीय रीति** अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये। यह विधि सरल है। किन्तु **शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत न करने पर व्रत का जरा भी फल नहीं मिलता है।**

(५) एक बार व्रत पूरा करने के पश्चात फिर मन्नत कर सकते हैं और फिर से व्रत कर सकते हैं।

(६) **माता लक्ष्मी देवी के अनेक स्वरूप हैं। उनमें उनका 'धनलक्ष्मी स्वरूप' ही 'वैभलक्ष्मी' है और माता लक्ष्मी को श्रीयंत्र अति प्रिय है।** व्रत करते वक्त पुस्तक में दिये हुए मां लक्ष्मीजी के हर स्वरूप को और **'श्रीयंत्र'** को प्रणाम करना चाहिये। तभी व्रत का फल मिलता है। अगर हम इतनी भी मेहनत नहीं कर सकते हैं तो लक्ष्मीदेवी भी हमारे लिये कुछ करने को तैयार नहीं होंगी। और हम पर माँ की कृपा नहीं होगी।

(७) व्रत के दिन सुबह से ही 'जय मां लक्ष्मी', 'जय मां लक्ष्मी' का रटन मन ही मन करना चाहिये। और मा का पूरे भाव से स्मरण

करना चाहिये।

(८) शुक्रवार के दिन यदि आप प्रवास या यात्रा पर गये हों तो वह शुक्रवार छोड़कर उनके बाद के शुक्रवार को व्रत करना चाहिये पर व्रत अपने ही घर में करना चाहिये। सब मिला कर जितने शुक्रवार की मन्नत ली हो, उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(९) घर में सोना न हो तो चांदी की चीज पूजा में रखनी चाहिये। अगर वह भी न हो तो रोकड़ रुपया रखना चाहिये।

(१०) व्रत पूरा होने पर कम से कम सात स्त्रियों को या आपकी इच्छा अनुसार जैसे ११, २१, ५१, १०१ स्त्रियों को वैभवलक्ष्मी व्रत की पुस्तक कुमकुम का तिलक करके भेंट के रूप में देनी चाहियें। जितनी ज्यादा पुस्तक आप देंगे उतनी मां लक्ष्मी की ज्यादा कृपा होगी और मां लक्ष्मी जी का यह अद्‌भुत व्रत का ज्यादा प्रचार होगा।

(११) व्रत के शुक्रवार को स्त्री रजस्वला हो या सूतकी हो तो वह शुक्रवार छोड़ देना चाहिये और बाद के शुक्रवार से व्रत शुरु करना चाहिये। पर जितने शुक्रवार की मन्नत मानी हो, उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(१२) व्रत की विधि शुरु करते वक्त 'लक्ष्मी स्तवन' का एक बार पाठ करना चाहिये।

(१३) व्रत के दिन हो सके तो उपवास करना चाहिये और शाम को व्रत की विधि करके मां का प्रसाद लेकर शुक्रवार करना चाहिये। अगर न हो सके तो फलाहार या एक बार भोजन कर के शुक्रवार करना चाहिये। अगर व्रतधारी का शरीर बहुत कमजोर हो तो ही दो बार भोजन ले सकते हैं। सबसे महत्त्व की बात यही है कि व्रतधारी मां लक्ष्मीजी पर पूरी-पूरी श्रद्धा और भावना रखें। और 'मेरी मनोकामना मां पूरी करेगी ही', ऐसा दृढ़ संकल्प करें।

माँ वैभवलक्ष्मी आप पर प्रसन्न हों।

वैभवलक्ष्मी व्रत की कथा

एक बड़ा शहर था। इस शहर में लाखों लोग रहते थे। पहले के जमाने के लोग साथ-साथ रहते थे और एक दूसरे के काम आते थे। पर नये जमाने के लोगों का स्वरूप ही अलग सा है। सब अपने अपने काम में रत रहते हैं। किसी को किसी की परवाह नहीं। घर के सदस्यों को भी एक-दूसरे की परवाह नहीं होती। भजन-कीर्तन, भक्ति-भाव, दया-माया, परोपकार जैसे संस्कार कम हो गये हैं। शहर में बुराइयाँ बढ़ गई थी। शराब, जुआ, रेस, व्यभिचार, चोरी-डकैती वगैरह बहुत से गुनाह शहर में होते थे।

कहावत है कि 'हजारों निराशा में एक अमर आशा छिपी हुई है।' इसी तरह इतनी सारी बुराइयों के बावजूद शहर में कुछ अच्छे लोग भी रहते थे।

ऐसे अच्छे लोगों में शीला और उनके पति की गृहस्थी मानी जाती थी। शीला धार्मिक प्रकृति की और संतोषी थी। उनका पति भी विवेकी और सुशील था।

शीला और उनका पति इमानदारी से जीते थे। वे किसी की बुराई करते न थे और प्रभु भजन में अच्छी तरह समय व्यतीत कर रहे थे। उनकी गृहस्थी आदर्श गृहस्थी थी और शहर के लोग उनकी गृहस्थी की सराहना करते थे।

शीला की गृहस्थी इसी तरह खुशी-खुशी चल रही थी। पर कहा जाता है कि '**कर्म की गति अकल है**', विधाता के लिखे लेख कोई नहीं समझ सकता है। इन्सान का नसीब पल भर में राजा को रंक बना देता है और रंक को राजा। शीला के पति के अगले जन्म के कर्म भोगने के बाकी रह गये होंगे कि वह बुरे लोगों से दोस्ती कर बैठा। वह जल्द से जल्द '**करोड़पति**' होने के ख़्वाब देखने लगा। इसलिये वह गलत रास्ते पर चढ़ गया और '**करोड़पति**' की बजाय '**रोडपति**' बन गया। याने रास्ते पर भटकते भिखारी जैसी उसकी हालत हो गई।

शहर में शराब, जुआ, रेस, चरस-गांजा वगैरह बदियां फैली हुई थीं। उसमें शीला का पति भी फँस गया। दोस्तों के साथ उसे भी शराब की आदत हो गई। जल्द से जल्द पैसे वाला बनने की लालच में दोस्तों के साथ रेस जुआ भी खेलने लगा। इस तरह बचाई हुई धनराशि, पत्नी के गहने, सब कुछ रेस-जुए में गंवा दिया।

इसी तरह एक वक्त ऐसा भी था कि वह सुशील पत्नी शीला के साथ मजे में रहता था और प्रभु भजन में सुख-शांति से वक्त व्यतीत करता था। उसके बजाय घर में दरिद्रता और भूखमरी फैल गई। सुख से खाने की बजाय दो वक्त भोजन के लाले पड़ गये। और शीला को पति की गालियां खाने का वक्त आया।

शीला सुशील और संस्कारी स्त्री थी। उसको पति के बर्ताव से बहुत दुःख हुआ। किन्तु वह भगवान पर भरोसा करके बड़ा दिल रख कर दुःख सहने लगी। कहा जाता है कि '**सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख**' आता ही है। इसलिये दुःख के बाद सुख आयेगा ही, ऐसी श्रद्धा के साथ शीला प्रभु भक्ति में लीन रहने लगी।

इस तरह शीला असह्य दुःख सहते-सहते प्रभुभक्ति में वक्त

बिताने लगी। अचानक एक दिन दोपहर को उनके द्वार पर किसी ने दस्तक दी।

शीला सोच में पड़ गई कि मुझ जैसे गरीब के घर इस वक्त कौन आया होगा?

फिर भी द्वार पर आये हुए अतिथि का आदर करना चाहिये, ऐसे आर्यधर्म के संस्कार वाली शीला ने खड़े होकर द्वार खोला।

देखा तो सामने एक मांजी खड़ी थी। वे बड़ी उम्र की लगती थी। किन्तु उनके चेहरे पर अलौकिक तेज निखर रहा था। उनकी आँखों में से मानो अमृत बह रहा था। उनका भव्य चेहरा करुणा और प्यार से छलकता था। उनको देखते ही शीला के मन में अपार शांति छा गई। वैसे शीला इस मांजी को पहचानती न थी। फिर भी उनको देखकर शीला के रोम-रोम में आनंद छा गया। शीला मांजी को आदर के साथ घर में ले आयी। घर में बिठाने के लिए कुछ भी नहीं था। अतः शीला ने सकुचा कर एक फटी हुई चद्दर पर उनको बिठाया।

मांजी ने कहा : 'क्यों शीला! मुझे पहचाना नहीं?

शीला ने सकुचा कर कहा : 'मां! आपको देखते ही बहुत खुशी हो रही है। बहुत शांति हो रही है। ऐसा लगता है कि मैं बहुत दिनों से जिसे ढूंढ़ रही थी वे आप ही हैं। पर मैं आपको पहचान नहीं सकती।

मांजी ने हँस कर कहा : 'क्यों? भूल गई? हर शुक्रवारर को लक्ष्मीजी के मंदिर में भजन-कीर्तन होते हैं, तब मैं भी वहां आती हूं। वहाँ हर शुक्रवार को हम मिलते हैं।'

पति गलत रास्ते पर चढ़ गया, तब से शीला बहुत दुःखी हो गई थी और दुःख की मारी वह लक्ष्मीजी के मंदिर में भी नहीं जाती थी। बाहर के लोगों के साथ नजर मिलाते भी उसे शर्म लगती थी। उसने याददास्त पर जोर दिया पर यह मांजी याद नहीं आ रहे थे।

तभी मांजी ने कहा, 'तू लक्ष्मीजी के मंदिर में कितने मधुर भजन गाती थी! अभी-अभी तू दिखाई नहीं देती थी, इसलिये मुझे हुआ कि तू क्यों नहीं आती है? कहीं बीमार तो नहीं हो गई है न? ऐसा सोच कर मैं तुझे मिलने चली आई हूं।'

मांजी के अति प्रेम भरे शब्दों से शीला का हृदय पिघल गया। उसकी आँखों में आंसू आ गये। मांजी के सामने वह बिलख-बिलख कर रोने लगी। यह देख कर मांजी शीला के नजदीक सरके और उसकी सिसकती पीठ पर प्यार भरा हाथ फेर कर सांत्वना देने लगे।

मांजी ने कहा : 'बेटी! सुख और दु:ख तो धूप और छांव जैसे होते हैं। सुख के पीछे दु:ख आता है, तो दु:ख के पीछे सुख भी आता है। धैर्य रखो बेटी! और तुझे क्या परेशानी है? तेरे दु:ख की बात मुझे सुना। तेरा मन भी हलका हो जायेगा और तेरे दु:ख का कोई उपाय भी मिल जायेगा।'

मांजी की बात सुन कर शीला के मन को शांति मिली। उसने मांजी को कहा, 'मां! मेरी गृहस्थी में भरपूर सुख और खुशियाँ थीं। मेरे पति भी सुशील थे। भगवान की कृपा से पैसे की बात में भी हमें संतोष था। हम शांति से गृहस्थी चलाते ईश्वर-भक्ति में अपना वक्त व्यतीत करते थे। यकायक हमारा भाग्य हमसे रूठ गया। मेरे पति को बुरी दोस्ती हो गई। बुरी दोस्ती की वज़ह से वे शराब, जुआ, रेस, चरस-गांजा वगैरह खराब आदतों के शिकार हो गये और उन्होंने सब कुछ गँवा दिया। और हम रास्ते के भिखारी जैसे बन गये।'

यह सुन कर मांजी ने कहा : 'सुख के पीछे दु:ख और दु:ख के पीछे सुख आता ही रहता है। ऐसा भी कहा जाता है कि, 'कर्म की गति न्यारी होती है।' हर इन्सान को अपने कर्म भुगतने ही पड़ते हैं। इसलिये तू चिंता मत कर। अब तू कर्म भुगत चुकी है। अब

तुम्हारे सुख के दिन अवश्य आयेंगे। तू तो मां लक्ष्मीजी की भक्त है। मां लक्ष्मीजी तो प्रेम और करुणा के अवतार हैं। वे अपने भक्तों पर हमेशा ममता रखती हैं। इसलिये तू धैर्य रख के **मां लक्ष्मीजी का व्रत'** कर। इससे सब कुछ ठीक हो जायेगा।'

'मां लक्ष्मीजी का व्रत' करने की बात सुन कर शीला के चेहरे पर चमक आ गई। उसने पूछा . 'मां! लक्ष्मीजी का व्रत कैसे किया जाता है, वह मुझे समझाइये। मैं यंह व्रत अवश्य करूंगी।'

मांजी ने कहा, 'बेटी! मां लक्ष्मीजी का व्रत बहुत सरल है। उसे **'वरदलक्ष्मी व्रत'** या **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** कहा जाता है। यह व्रत करने वाले की सब मनोकामना पूर्ण होती हे। वह सुख-संपत्ति और यश प्राप्त करता है।' ऐसा कह कर मांजी **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की विधि कहने लगी।

'बेटी! वैभवलक्ष्मी व्रत वैसे तो सीधा-सादा व्रत है। किन्तु कई लोग यह व्रत गलत तरीके से करते हैं। अतः उसका फल नहीं मिलता। कई लोग कहते हैं कि सोनें के गहने की हलदी-कुमकुम से पूजा करो। बस! व्रत हो गया। पर ऐसा नहीं है। कोई भी व्रत शास्त्रीय विधिपूर्वक करना चाहिये। तभी उसका फल मिलता है। सिर्फ सोने के गहने की पूजा करने से फल मिल जाता हो तो सभी आज लखपति बन गये होते। सच्ची बात यह है कि सोने के गहनों का विधि से पूजन करना चाहिये। व्रत की उद्यापन विधि भी शास्त्रीय विधि मुताबिक करनी चाहिये। तभी यह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** फल देता है।

यह व्रत शुक्रवार को करना चाहिये। सुबह में स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहनो और सारा दिन मन में **'जय मां लक्ष्मी'**, **'जय मां लक्ष्मी'** का रटन करते रहो। किसी की चुगली नहीं करनी चाहिये। शाम को पूर्व दिशा में मुँह रख सकें, इसी तरह आसन पर बैठ जाओ।

सामने पाटा रख कर उसके ऊपर रुमाल रखो। रुमाल पर चावल का छोटा सा ढेर करो। उस ढेर पर पानी से भरा तांबे का कलश रख कर, कलश पर एक कटोरी रखो। उस कटोरी में एक सोने का गहना रखो। सोने का न हो तो चांदी का भी चलेगा। चांदी का न हो तो नकद रुपया भी चलेगा। बाद में घी का दीपक जला कर धूपसली सुलगा कर रखो।

मां लक्ष्मीजी के बहुत स्वरूप हैं। और मां लक्ष्मीजी को **'श्री यंत्र'** अति प्रिय है। अत: **'वैभवलक्ष्मी'** में पूजन विधि करते वक्त सौ प्रथम **'श्री यंत्र'** और लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों का सच्चे दिल से दर्शन करो। (इस पुस्तक के अगले पृष्ठों पर **'श्री यंत्र'** और **माँ लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों की छबि दी गई है।) उसके बाद 'लक्ष्मी स्तवन'** का पाठ करो। बाद में कटोरी में रखे हुए गहने या रुपये को हल्दी-कुमकुम और चावल चढ़ा कर पूजा करो और लाल रंग का फूल चढ़ाओ। शाम को कोई मीठी चीज बना कर उसका प्रसाद रखो। न हो सके तो शक्कर या गुड़ भी चल सकता है। फिर आरती करके ग्यारह बार सच्चे हृदय से **'जय माँ लक्ष्मी'** बोलो। बाद में ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार यह व्रत करने का दृढ़ संकल्प माँ के सामने करो और आपकी जो मनोकामना हो वह पूरी करने को माँ लक्ष्मीजी को विनती करो। फिर माँ का प्रसाद बाँट दो। और थोड़ा प्रसाद अपने लिये रखो। अगर आप में शक्ति हो तो सारा दिन उपवास रखो और सिर्फ प्रसाद खा कर शुक्रवार करो। न शक्ति हो तो एक बार शाम को प्रसाद ग्रहण करते समय खाना खा लो। अगर थोड़ी शक्ति भी न हो तो दो बार भोजन कर सकते हो। बाद में कटोरी में रखा गहना या रुपया ले लो। कलश का पानी तुलसी क्यारे में डाल दो। और चावल पक्षियों को डाल दो। इसी तरह शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत करने से उसका फल अवश्य मिलता है। इस व्रत के प्रभाव से सब प्रकार की विपत्ति दूर हो कर आदमी

मालामाल हो जाता है। संतान न हो उसे संतान प्राप्ति होती है। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रहता हैं। कुमारी लड़की को मनभावन पति मिलता है।

शीला यह सुन कर आनंदित हो गई। फिर पूछा : 'माँ! आपने '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की जो शास्त्रीय विधि बताई है, वैसे मैं अवश्य करूंगी। किन्तु इसकी उद्यापन विधि किस तरह करनी चाहिये? यह भी कृपा करके सुनाइये।'

माँजी ने कहा : 'ग्यारह या इक्कीस जो मन्नत मानी हो उतने शुक्रवार यह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' पूरी श्रद्धा और भावना से करना चाहिये। व्रत के आखरी शुक्रवार को जो शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये वह मैं तुझे बताती हूँ। आखरी शुक्रवार को खीर या नैवेध रखो। पूजन विधि हर शुक्रवार को करते हैं वैसे ही करनी चाहिये। पूजन विधि के बाद श्रीफल फोड़ो और कम से कम सात कुंवारी या सौभाग्यशाली स्त्रियों को कुमकुम का तिलक करके साहित्य संगम की '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की एक-एक पुस्तक उपहार में देनी चाहिये। और सब को खीर का प्रसाद देना चाहिये। फिर धनलक्ष्मी स्वरूप, वैभवलक्ष्मी स्वरूप, माँ लक्ष्मीजी की छबि को प्रणाम करें। माँ लक्ष्मीजी का यह स्वरूप वैभव देने वाला है। प्रणाम करके मन ही मन भावुकता से माँ की प्रार्थना करते वक्त कहें कि, 'हे माँ धनलक्ष्मी! हे माँ वैभवलक्ष्मी! मैंने सच्चे हृदय से आपका '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' पूर्ण किया है। तो हे माँ! हमारी (जो मनोकामना की हो वह बोलो) की मनोकामना पूर्ण करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो उसे संतान देना। सौभाग्यशाली स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कंवारी लड़की को मनभावन पति देना। आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत जो करे उनकी सब विपत्ति दूर करना। सब को सुखी करना। हे माँ! आपकी महिमा अपरंपार है।'

इस तरह माँ की प्रार्थना करके माँ लक्ष्मीजी का '**धनलक्ष्मी स्वरूप**' को भाव से वंदन करो।'

मांजी के पास से '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की शास्त्रीय विधि सुन कर शीला भावविभोर हो उठी। उसे लगा मानो सुख का रास्ता मिल गया है। उसने आँखें बंद करके मन ही मन उसी क्षण संकल्प लिया कि, 'हे वैभवलक्ष्मी माँ! मैं भी मांजी के कहे मुताबिक श्रद्धा से, शास्त्रीय विधि अनुसार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' इक्कीस शुक्रवार तक करूंगी और व्रत की शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करूंगी।'

शीला ने संकल्प करके आंखें खोली तो सामने कोई न था। वह विस्मित हो गई कि मांजी कहाँ गये? यह मांजी दूसरा कोई न था... साक्षात् लक्ष्मीजी ही थीं। शीला लक्ष्मीजी की भक्त थी। इसलिये अपने भक्त को रास्ता दिखाने के लिए माँ लक्ष्मी देवी मांजी का स्वरूप धारण करके शीला के पास आई थीं।

दूसरे दिन शुक्रवार था। सवेरे स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहन कर शीला मन ही मन श्रद्धा से और पूरे भाव से 'जय मां लक्ष्मी, 'जय मां लक्ष्मी' का मन ही मन रटन करने लगी। सारा दिन किसी की चुगली की नहीं। शाम हुई तब हाथ-पांव-मुंह धो कर शीला पूर्व दिशा में मुंह करके बैठी। घर में पहले सोने के बहुत से गहने थे। पर पतिदेव ने ग़लत रास्ते पर चढ़ कर सब गहने गिरवी रख दिये थे। पर नाक की चुन्नी बच गई थी। नाक की चुन्नी निकाल कर, उसे धो कर शीला ने कटोरी में रख दी। सामने पाटे पर रुमाल रख कर मुट्ठी भर चवल का ढेर किया। उस पर तांबे का कलश पानी भर कर रखा। उसके ऊपर चुन्नी वाली कटोरी रखी। फिर मांजी ने कही थी, वह शास्त्रीय विधि अनुसार वंदन, स्तवन, पूजन वगैरह किया। और घर में थोड़ी शक्कर थी, वह प्रसाद में रख कर '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' किया।

यह प्रसाद पहले पति को खिलाया। प्रसाद खाते ही पति के

स्वभाव में फर्क पड गया। उस दिन उसने शीला को मारा नहीं, मनाया भी नहीं। शीला को बहुत आनंद हुआ। उनके मन में **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के लिये श्रद्धा बढ़ गई।

शीला ने पूर्ण श्रद्धा-भक्ति से 'इक्कीस शुक्रवार तक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** किया। इक्कीसवे शुक्रवार को मांजी के कहे मुताबिक उद्यापन विधि कर के सात स्त्रियों को **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की सात पुस्तकें उपहार में दीं। फिर माताजी के **'धनलक्ष्मी स्वरूप'** की छवि को वंदन करके भाव से मन ही मन प्रार्थना करने लगी : '**हे मां धनलक्ष्मी! मैंने आप का 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करने की मन्नत मानी थी वह व्रत आज पूर्ण किया है। हे माँ! मेरी हर विपत्ति दूर करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो, उसे संतान देना। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कंवारी लड़की को मनभावन पति देना। आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत करे, उनकी सब विपत्ति दूर करना। सब को सुखी करना। हे मां! आपकी महिमा अपार है।**' ऐसा बोल कर लक्ष्मीजी के **'धनलक्ष्मी स्वरूप'** की छबि को प्रणाम किया।

इस तरह शास्त्रीय विधिपूर्वक शीला ने श्रद्धा से व्रत किया और तुरन्त ही उसे फल मिला। उसका पति गलत रास्ते पर चला गया था, वह अच्छा आदमी हो गया और कड़ी मेहनत करके व्यवसाय करने लगा। मां लक्ष्मीजी के **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से उसको ज्यादा मुनाफ़ा होने लगा। उसने तुरन्त शीला के गिरवी रखे गहने छुड़ा लिये। घर में धन की बाढ़ सी आ गई। घर में पहले जैसी सुख-शांति छा गई।

'वैभवलक्ष्मी व्रत' का प्रभाव देख कर मोहल्ले की दूसरी स्त्रियाँ भी शास्त्रीय विधिपूर्वक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने लगी।

हे मां धनलक्ष्मी! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुई, उसी तरह आपका व्रत करने वाले सब पर प्रसन्न होना। सबको सुख-शांति देना। जय धनलक्ष्मी मां! जय वैभवलक्ष्मी मां!

वैभवलक्ष्मी माँ के चमत्कार

१. लॉटरी लगी

नवसारी से एक बहन का पत्र था।

हम बहुत गरीब थे। मेरे पति अपंग और बीमार थे। दो छोटे बच्चे थे। बड़ी लड़की पोस्ट में नौकरी करती थी। उसकी तनख्वाह में से घर खर्च चल रहा था। वह पच्चीस साल की हो गई थी। इसलिये हम उसकी शादी करने की फिक्र में थे।

संयोग से एक लड़का भी मिल गया। लड़की को लड़का पसंद आ गया और लड़के को लड़की पसंद आ गई। शादी की तिथि पक्की हो गई। पर एक बाधा आई। लड़के की मां ने कहा, 'शादी भले हीं सादगी से हो जाये पर आपकी लड़की १०० ग्राम सोनें के गहने ले कर आयेगी तो ही यह शादी होगी। वरना मैं संमति नहीं दूंगी।'

हमारी स्थिति चिताजनक हो गई। मानो किनारे पर आयी नौका डूबने लगी। बचत तो थी नहीं! अब १०० ग्राम सोना कहाँ से निकालें?

मैं उदास होकर दरवाजे पर खड़ी थी। तभी बाहर के रास्ते पर से एक मोटर-साईकिल तेज़ी से गुज़र गई। उसकी ऊपर से कोई चीज़ सरक कर हवा में उड़ी और नीचे गिर गई। मैं जिज्ञासा से बाहर निकल कर देखने लगी कि क्या गिर गया? तो वह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब थी। मैंने साड़ी से पोंछ कर उसे साफ किया और आंखों पर लगा कर बाहर ही बैठ कर पढ़ने लगी।

पढ़ते-पढ़ते मुझे हुआ कि मैं भी यह वैभवलक्ष्मी व्रत करूं तो मेरी आपत्ति भी टल जाये। लगता है माताजी ने मदद करने के लिये ही यह किताब मेरे तक पहुँचा दी होगी। मेरे मन में अदम्य श्रद्धा जाग गई।

दूसरे दिन शुक्रवार था। मैंने स्नान कर के ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मान कर संकल्प किया। और किताब में लिखे मुताबिक विधि अनुसार पूरे भाव और श्रद्धा से व्रत करने लगी। शुक्रवार को सारा दिन **'जय मां लक्ष्मी'** का रटन किया। शाम को चावल के ढेर पर तांबे के जल से भरा कलश रख कर, ऊपर कटोरी रखी। उसमें मेरे हाथ की सोने की अंगूठी रखी। उस किताब में लिखे अनुसार विधि पूजन करके गुड़ का प्रसाद रखा।

रात-दिन मेरा ध्यान **'धनलक्ष्मी मॉं'** की छबि में लगा रहता। मैं रोज उनके दर्शन कर के गिड़गिड़ाती। पांचवें शुक्रवार को शाम को मैंने **'धनलक्ष्मी मां'** की छबि का दर्शन करके पूजन विधि शुरु की, तभी मेरा पंद्रह साल का लड़का दौड़ता आया। उसने कहा, 'मां! देख! हमारी महाराष्ट्र की लॉटरी लगी। पूरे पचास हजार का इनाम लगा है, मां!'

मैं आनंद से उछल पड़ी। मैंने कहा, 'तू जरा ठहर जा। मुझे पूजन कर लेने दे। प्रसाद ग्रहण कर के बात करेंगे। मैंने उमंग से व्रतविधि पूर्ण की और हम सबने अति श्रद्धा से मां का प्रसाद ग्रहण किया। बाद में हम सब ने लॉटरी का नंबर चेक किया तो उनकी बात सच थी।

माताजी ने मेरी मुसीबत दूर कर दी थी। लॉटरी के पैसे मिलते ही उसमें से मैंने १०० ग्राम सोना ले कर लड़की के लिये गहने बनवाये और लड़की की शादी की। उसे गहने दे कर ससुराल भेजी।

इस तरह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से धनलक्ष्मी मां ने मेरा

दुःख दूर कर दिया। **जय धनलक्ष्मी मां।**

२. खोये हुए हीरे वापस मिले

मेरे पति हीरे की दलाली करते हैं। हमारी आवक भी अच्छी है।

अचानक एक दिन हमारे पर विपत्ति टूट पड़ी। रात्रि को मेरे पति घर आये। रोज के मुताबिक शर्ट उतार कर कील पर लटका दिया। पेन्ट बदल कर लूंगी पहनी और पेन्ट के खीसे में से हीरे के पैकेट निकालने गये तो नहीं मिले। मैंने कीचन में से देखा कि वे कुछ ढूंढ़ रहे हैं। मैंने पूछा कि, 'क्या ढूंढ़ रहे हो? कुछ खो गया है?'

'हाँ! हीरे का पैकेट नहीं मिल रहा। पेंन्ट के बायें जेब में रखा था। नहीं मिला तो हम बरबाद हो जायेंगे।'

मेरे भी होशोहवाश उड़ गये। तेज़ी से गैस बंद कर के मैं और वे आने-जाने के रास्ते, अपार्टमेंट की सीढ़ियां, रास्ता सब जगह ढूंढने लगें। पर कहीं भी पैकेट दिखाई नहीं दिया।

हम दोनों पति-पत्नी उदास हो कर सोफे पर बैठ गये। बहुत सुख था। अब बहुत बड़ा दुःख आ गया।

उसी समय मेरे पति के दोस्त अपनी पत्नी के साथ हम से मिलने आये। मैं ने आवकार देकर उनको बिठाया और पानी दिया। हमारे उदास चेहरे देखकर उन्होंने हँस कर पूछा, 'क्या बात है भाई! मुँह लटकाये क्यों बैठे हो? लड़ाई-झगड़ा हो गया है क्या?'

मुझे रोना आ गया। मैंने रोते-रोते हीरे का पैकेट खो जाने की बात कही। और वे लोग भी दंग रह गये।

कुछ सोच कर दोस्त की पत्नी रमीला बहन मुझे रसोईघर में ले गई और कहा, 'भाभी! आप मेरी एक बात मानेंगी?'

'क्या?'

'आप **वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानो। आदमी व्रत में भले ही न मानते हों, पर हम औरतों को व्रत में श्रद्धा रखनी चाहिये।

यह व्रत धनलक्ष्मी माता का है। आप मन्नत रख लो।' और उसने मुझे व्रत की विधि बतायी।

मैंने तुरन्त ही हाथ-पांव धो कर इक्कीस शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की मन्नत मानी और ५१ **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब बाँटने की मन्नत मानी।

सारी रात मैं **'जय मां लक्ष्मी'** का रटन करती रही। सवेरे थोड़ा-थोड़ा उजाला होते ही माताजी की प्रेरणा से हम हीरे का पैकेट ढूंढ़ने निकल पड़े। जिस रास्ते से वे स्कूटर पर आये थे वही रास्ते पर मां का रटन करते-करते हम ध्यान से पैकेट ढूंढ़ते-ढूंढ़ते धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। हीरा बाज़ार में दाखिल होते ही एक कोने पर कूड़े में आधा से दबा हुए एक पैकेट पर मेरी नज़र गई। मैंने पति को दिखाया।

'यही है! यही है!' मेरे पति ने चिल्लाते हुए तेज़ी से पैकेट उठा लिया। हीरे की छोटी-छोटी पुड़ी को रबड़ बैंड से जकड़ कर एक पैकेट बनाया था, वह पैकेट वैसे का वैसा ही मिल गया।

जब शुक्रवार आया तब हम दोनों ने व्रत शुरु किया और पूरे भाव से इक्कीस शुक्रवार पूरे किये। उद्यापन विधि में हमने आपके यहां से ५१ **'वैभव लक्ष्मी व्रत'** की पुस्तकें लेकर ५१ स्त्रियों को उपहार में दी।

३. चोरी हो गये गहने वापस मिले

नीला बहन का फ्लेट का दरवाजा गलती से खुला रह गया था। उस समय ऊपर के फ्लेट में मिस्त्री का काम हो रहा था। ईंट ले जाते हुए एक मज़दूर ने यह देखा। वह नीयत का अच्छा नहीं था। उसने यह मौके का फायदा उठाया और फ्लेट में घुस गया। नीला बहन स्नान करने बाथरूम में गई थी। फ्लेट में कोई न था। मजदुर

तेजी से सामान ऊपर-नीचे करने लगा। अचानक बेडरूम में गद्दे के नीचे से सोने का हार, मंगलसूत्र और दो कंगन मिल गये। गहने को जेब में सरका कर वह तेजी से बाहर निकला और फिर से ईंट लाने लगा। आधे-पौने घंटे के बाद पेट में दर्द होने का बहाना निकाल कर वह भाग निकला।

नीला बहन को अच्छी कहो या बुरी, यही आदत थी कि रात को गहने निकाल कर गद्दे के नीचे रख देती और दूसरे दिन खाना बना कर पहन लेती। उनको तो ख्याल भी नहीं था कि गहने चोरी हो गये हैं। खाना बना कर उन्होंने हाथ साफ़ किये और गहने पहनने के लिये गद्दे के नीचे हाथ डाला तो कुछ नहीं मिला। उन्होंने तेजी से सब उलट-पुलट कर डाला पर गहने कहीं भी नहीं मिले। उन्होंने सारा बेडरूम छान मारा। पर कुछ नहीं मिला। वे तो जोर जोर से रोने लगी। रोने की आवाज़ सुन कर सब पड़ोसन दौड़ी आई और हकीकत सुन कर नीला बहन को सांत्वन देने लगी। उनका मायका पीछे की गली में ही था। कोई दौड़ कर वहां खबर दे आया। उनकी मां और बहन भी दौड़ती आई।

मां को देख कर नीला बहन फिर से सिसक-सिसक कर रोने लगी। मां ने कहा 'नीला! पहने हुए गहने निकालने ही नहीं चाहिये। अगर निकाले तो अलमारी में रखने चाहिये। जो हुआ सो ... तू ज़ानती है, मुझे **'धनलक्ष्मी मां'** पर बहुत श्रद्धा है। उनका ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की मन्नत ले। मां तेरी बिगड़ी सुधारेगी।'

नीला बहन ने तुरन्त हाथ-पाँव धो कर ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करके ग्यारह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की पुस्तक उपहार में देने की मन्नत मानी और मन ही मन **'जय मां लक्ष्मी'** का जप पूरे भाव से करने लगी।

थोडी देर में उनके पति घर पर आये। नीला बहन ने रोते-रोते

सब बात बताई। पति ने कहा, 'रोने से कुछ नहीं होगा। चल थाने में रिपोर्ट लिखवायें।'

दोनों पति-पत्नी घर बंद करके थाने गये और पुलिस इन्स्पेक्टर को चोरी की बात बता कर रिपोर्ट लिखने की विनती की।

इन्स्पेक्टर रिपोर्ट लिखने लगा। नीला बहन गहने की माहिती लिखवा रही थी कि पुलिस कांस्टेबल एक मजदूर को पकड़ कर वही थाने में आया और बोला :

'साब! यह आदमी सुनार की दुकान के आगे टहल रहा था। मुझे शक हुआ और मैंने उसे पकड़ लिया। तो इसकी जेब में से यह गहने निकल आये।' और नीला बहन के ही चार गहने कांस्टेबल ने इन्स्पेक्टर की टेबल पर रख दिये, जिसकी माहिती नीलाबहन इन्स्पेक्टर को लिखवा रही थी।

इन्स्पेक्टर भी विस्मित हो गया कि रिपोर्ट लिखते-लिखते ही चोर पकड़ा गया।

उस मजदूर ने गुनाह कबूल कर लिया और यह भी बताया कि उसने किस तरह और कहां से यह गहने चुराये थे। और नीला बहन को भी पहचान लिया। लिखापट्टी करके इन्स्पेक्टर ने गहने नीला बहन को सौंप दिये।

इस तरह धनलक्ष्मी मां की कृपा से चोरी हो गये गहने नीला बहन को तुरन्त वापस मिल गये। नीला बहन ने ग्यारह शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करके ग्यारह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की पुस्तक भाव से बांटी और अपनी मन्नत पूरी की।

ऐसा है **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का प्रभाव!

४. बिजनस अच्छा चलने लगा

भागीदारी में झगड़ा हुआ। बिजनस का बंटवारा हो गया। तभी से सुरेश के बुरे दिन शुरु हुए। वह दिन-रात मेहनत करता था। पर

धधा ठीक से नहीं चल रहा था। एक ही साल में वह टूट गया। उनकी पत्नी सरला बहुत सुशील थी। वह हिम्मत देती रहती। पर घंधा न चले तो आदमी का मन किस तरह प्रफुल्लित होगा? सरला चोरी-छुपे से कुछ न कुछ बेच कर घर चलाती थी। पति मन से और तबियत से ढीला होता जाता था। यह देख कर उनका मन व्यथीत होता।

एक बार उसकी मौसी उससे मिलने आई। सरला को मौसी की साथ अच्छी पटती थी। उसने मौसी को सब कुछ बता दिया। और रो पड़ी।

मौसी ने कहा, 'तू **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की मन्नत ले और ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार व्रत कर। अभी मेरे साथ बाज़ार चल और व्रत की पुस्तक ख़रीद ले। धनलक्ष्मी मां तेरे सब दुःख दूर करेगी।'

तुरन्त तैयार हो कर सरला मौसी के साथ बाज़ार गई और साहित्य संगम की शास्त्रीय विधि वाली, श्रीयंत्र और माताजी के आठ स्वरूप वाली पुस्तक खरीद ली। दूसरे दिन शुक्रवार था। सरला विधिवत् इक्कीस शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की मन्नत मान कर व्रत करने लगी।'

दूसरे शुक्रवार को सुरेश शाम को आया तब उसके चेहरे पर ख़ुशी फूट रही थी। उसने कहा, 'सरला! आज तो चमत्कार हो गया। एक बहुत बड़ी कंपनी को हमारे स्पेयर पार्ट्स की क्वॉलिटी और डिजाइन जंच गई। उसने हमें बहुत बड़ा आर्डर दिया है। लगता है, हमारा नसीब बदल रहा है।'

बात भी सच निकली। इक्कीस शुक्रवार पूरे होते ही सुरेश का बिजनस तेजी से बढ़ने लगा। पूरे भाव से सरला ने व्रत की उद्यापन विधि की और **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का खरीदा हुआ पुस्तक तिजोरी में रख दिया।

एक ही साल में सुरेश ने मारुति कार खरीद ली।

ऐसा है **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का प्रभाव।

५. अच्छी नौकरी मिल गई

विमला बहन का पुत्र गजेश। एम.कॉम. में फर्स्ट क्लास आया। घर में खुशियां छा गई। दूसरे ही दिन से गजेश ने नौकरी की खोज शुरु कर दी। एम्प्लॉयमेंट में नाम तो लिखा दियां था। घर वालों को लगता था कि इतने अच्छे मार्क्स हैं, नौकरी तो मिल ही जायेगी। खुद गजेश को भी ऐसा ही लगता था। किन्तु उसका अनुमान गलत निकला। गजेश के पास L.G.V.G. की डिग्री न थी। आप समझ गये न? लागवल की डिग्री। उसके कोई चाचा-मामा अच्छी पोस्ट पर न थे।

नौकरी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक साल में गजेश थक सा गया। मध्यम कुटुंब में बेकार रहना जीते जी मरने बराबर था। घर में भी थोड़ी-थोड़ी चर्चा होने लगी।

गजेश की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय!

एक दिन विमला बहन को पड़ोसन मीना बहन अपने घर बुला गई। उसने **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** किया था, उसकी उद्यापन विधि कर रही थी। मीना बहन ने सात बहनों को कुमकुम का तिलक कर के **'वैभयलक्ष्मी व्रत'** की एक-एक पुस्तक दी और खीर का प्रसाद दिया। सब बहनों में आपस-आपस में **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की महिमा की बातें हुई। थोड़ी ही देर में सब अपने-अपने घर चली गईं।

विमला बहन भी **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब लेकर घर आई। घर का काम निपटा कर वे किताब देखने लगी। किताब में दिये **'श्रीयंत्र'** देखते ही उन्होंने अपने मायके का वैभव याद आया। उनके पिताजी तिजोरी में **'श्रीयंत्र'** रखते थे। वे कहते थे- **'श्रीयंत्र'** लक्ष्मीजी का तांत्रित स्वरूप है। जहां **'श्रीयंत्र'** होगा, वहां अवश्य

लक्ष्मीजी का निवास होगा। विमला बहन ने भाव से श्रीयंत्र पर माथा टेका। बस! उनके मन में हलचल होने लगी। उनको **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की हृदय से प्रेरणा हुई।

उन्होंने किताब के आगे देखा तो लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप थे। उन्होंने सब पर माथा टेका। तभी उनको याद आया कि, 'उनकी मम्मी कहती थी, 'लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों के दर्शन करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और वह घर में निवास करती है।' उनके मायके में मां लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप की छवियां थीं। मम्मी रोज उनकी पूजा करती थी।

विमला बहन ने **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने का निर्णय किया।

उन्होंने पूरी किताब पढ़ कर व्रत की विधि समझ ली। तभी गजेश आया। विमला बहन ने किताब बता कर उसे भी व्रत करने की सलाह दी। गजेश को मां पर बहुत स्नेह था। वह मां की बात कभी भी टालता न था। उसने मां का मन रखने को 'हां' कह दी।

शुक्रवार आते ही मां-बेटे ने साथ ही **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मानी और उसी शुक्रवार से व्रत करना शुरु किया।

शनिवार किया....रविवार किया.... और सोमवार को गार्डन मिल से इन्टरव्यु का लेटर आया। मंगलवार को वह इन्टरव्यु के लिये गया। इन्टरव्यु अच्छा गया। शुक्रवार को एपाइन्टमेन्ट लेटर मिल गया। इस तरह गजेश को अच्छी नौकरी मिल गई।

घर में आनंद छा गया।

गजेश ने दुबारा इक्कीस शुक्रवार **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने की मन्नत मानी। **'धनलक्ष्मी मां'** की दया से गजेश को प्रमोशन मिलता ही गया और तेजी से वह बड़े ओहदे पर आ गया।

इस तरह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के प्रभाव से गजेश को अच्छी नौकरी मिल गई।

६. सुख-समृद्धि मिले

मालती स्वभाव की सरल, होशियार, मृदुभाषी और कार्यनिपूण थी। फिर भी उन पर दुःख के पहाड़ टूट पड़े।

दो पुत्र हुए। फिर अचानक उनके पति को स्कूटर एक्सीड़ेन्ट हुआ। और उनके दो पांव कट गये। दाहिना हाथ भी क्षतिग्रस्त हो गया। समझो जान ही बच गई। घर की जवाबदारी मालती पर आ पड़ी। शादी को चार-पांच साल ही हुए थे। इसलिये बचत भी न थी। सिर्फ फ्लेट था... अपना।

वह बहुत व्याकुल हो गई। किन्तु बाहर से पति को जरा सा भी लगने न दिया कि वह घबरा गई है। उसने पति को बहुत हिम्मत दी।

सुख में सुनार, दुःख में राम.... यह कहावत अनुसार मालती को भगवान याद आये। ऐसे संकट से तो भगवान ही बचा सकते हैं। वह सोचने लगी कि मैं क्या करूं तो मुझे कुछ रास्ता मिले।

अचानक उसको याद आया कि उसकी सुशीभाभी कुछ तकलीफ आने पर बार-बार 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करती है और बार-बार उद्यापन करती है। वह यह व्रत की बहुत महिमा गाती है। एक उद्यापन में भाभी ने उसे भी बुलाया था और व्रत की पुस्तक दी थी।

व्रत की पुस्तक!

मालती ने अलमारी के एक कोने में रख छोड़ी थी। वह तुरन्त उठी और वह पुस्तक खोज निकाली। खोल कर उसमें छपे हुए श्रीयंत्र, लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप की छवियां देखी। व्रत की विधि पढ़ी। व्रत की महिमा पढ़ी। उसे हुआ, मैं भी यह व्रत करूं? लक्ष्मी मां अवश्य रास्ता दिखायेंगी।

और उसने वहीं बैठे-बैठे ही ग्यारह शुक्रवार 'वैभवलक्ष्मी

व्रत' करने की मन्नत मानी और वहीं बैठे-बैठे ही उसने मन ही मन 'जय मां लक्ष्मी' का रटन शुरु कर दिया।

शुक्रवार होते ही उसने पूरे भाव से 'वैभवलक्ष्मी व्रत' शुरु किया।

पाँचवां शुक्रवार था। उस दिन मालती की सखी रीमा उसे मिलने आयी। वे दोनों कॉलेज में साथ-साथ पढ़ती थीं। दोनों अपनी-अपनी बाते कर रही थीं। मालती की तकलीफें सुन कर रीमा ने कहा, 'मालती! तेरी तकलीफें दूर करने का एक रास्ता है। तू ब्युटी-पार्लर शुरु कर। तूने ब्युटी-पार्लर का कोर्स भी किया है और तू चित्रकारी भी अच्छी कर लेती है। तुझे तो यह सब कितना अच्छा आता है। तेरे फ्लेट में से एक रुम ब्युटी-पार्लर के लिए खाली कर दे। हमारे पड़ोसी ब्युटी-पार्लर का फर्नीचर-साधन सब बेचने वाले हैं। क्योंकि वे फोरेन जा रहे हैं। उन्हें जल्दी है। हमारा संबंध भी बहुत घरेलू है। मैं तुझे कम दाम में और हफ्ते से सब दिलवाऊंगी। ठीक है!'

मालती को यह बात जँच गई। उसने तुरन्त पति की अनुमति मांगी। पति को भी पत्नी घर में रह कर कुछ करे, उसमें कोई एतराज न था। उन्होंनें अनुमति दे दी। मालती ने रीमा को कहा, 'तू जल्दी ही मुझे ब्युटी-पार्लर का सामान दिलवा दे। मुझे तेरी बात बहुत जँच गई है। काम भी होगा और पति-बच्चों का ख्याल भी रहेगा। सात दिन में ही मालती ने घर में ब्युटी-पार्लर खोल दिया।

'धनलक्ष्मी मां' की कृपा से एक ही माह में उसका पार्लर अच्छा जम गया!

इस तरह 'वैभवलक्ष्मी व्रत' के प्रभाव से मालती को रास्ता मिल गया। एक ही साल में मालती ने बहुत से पैसे कमा लिए। उसमें से पड़ोस का फ्लेट खरीद कर उसमें एयरकन्डीशन ब्युटी-पार्लर खोला।

ऐसी है 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की महिमा।

७. खोया हुआ बच्चा वापस मिला

हेमा के दो लड़के थे। उसमें से दो साल का छोटा बच्चा कुंभ मेले में खो गया। उसकी बहुत खोज़ की। पेपर में दिया। टी.वी. पर दिया। गाँव-गाँव, शहर-शहर छान मारा। पर बच्चा नहीं मिला।

सारा घर शोकग्रस्त हो गया। मानो जीने का रस चला गया। रात-दिन हेमा रोया करती। उनके पति भी उदास से होकर हेमा को संभालने की कोशिश में लगे रहते। पति-पत्नी जैसे-तैसे समय व्यतीत करने लगे।

एक दिन वे लोग बड़े लड़के की पाठ्यपुस्तक खरीदने बाज़ार में गये। वहाँ पुस्तक विक्रेता की दुकान पर 'वैभवलक्ष्मी व्रत' की किताब देखी। उसे देखते ही देखते चार-पाँच बहनें पुस्तक की सात-सात प्रतियां ले गईं। हेमा और उसके पति को आश्चर्य हुआ। उन्होंने भी एक किताब खरीद ली और घर पर आये।

घर आ कर दंपति ने सारी किताब देखी-पढ़ी।

हेमा पति को कहने लगी : 'मैं भी यह व्रत करूंगी। मां तो दयालु है। दुनिया की रीत से सब कर देखा पर मेरा लाल नहीं मिला। अब माताजी ही हमारी आशा की ज्योत हैं। वे प्रसन्न होंगे तो जरुर मेरा बेटा मिल जायेगा। मैं पूरे भाव से माताजी को विनती करूंगी... मनाऊंगी।' कहते-कहते हेमा की आँखों में आँसू बहने लगे।

फिर हेमा ने हाथ-पांव धो कर मन्नत मानी : 'हे धनलक्ष्मी माँ! मैं आपका 'वैभवलक्ष्मी व्रत' इक्कीस शुक्रवार करूंगी। भाव से करूंगी। और आपकी १०१ किताबें बाटूँगी। पर माँ! मुझे मेरे खोये हुए लाल से मिला दो। ऐसा संकल्प करके हेमा गिड़गिड़ाने लगी।

बच्चे के खो जाने पर दोनों पति-पत्नी जरुरत हो उतना ही बोलते। समझो, मौन ही रहते। अतः हेमा निरंतर 'जय माँ लक्ष्मी' का रटन करने लगी।

शुक्रवार आते ही उसने पूरे भाव-भक्ति से 'वैभवलक्ष्मी व्रत' शास्त्रीय विधि से करने की शुरुआत की। घर में एक साल से कोई मीठी चीज बनायी ही नहीं थी। पर शुक्रवार को थोड़ा गुड़ का शीरा बना कर माताजी को प्रसाद रखा।

व्रत करके वह **'जय माँ लक्ष्मी'** का रटन करते-करते सो गई।

भोर होने से पहले हेमा को सपने में रंग-बिरंगी फव्वारे वाला बाग दिखाई दिया। वह बाग में उसका खोया हुआ बच्चा खेल रहा था। तुरन्त उसकी आँखें खुल गईं।

सवेरे उठते ही उसने स्नान करके धूप-दीप किया और **'धनलक्ष्मी माँ'** की छबि को, लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों को और श्रीयंत्र को वंदन करके माथा टेका। फिर लक्ष्मी स्तवन किया। बाद में माताजी के सपने की बात कही। माताजी के मंदिर में जाकर श्रीफल रखा और वहाँ भी सपने की बात कही। बाद में घर आकर पति को सपने की बात कही।

उसके पति ने कहा, 'तू जो बाग का वर्णन करती है, वह मैसुर का वृंदावन गार्डन लगता है। मैं एक बार वहाँ गया था।'

'तो चलो। हम वहीं जाकर मेरे लाडले को ढूंढेंगे। मेरा मन कहता है, माताजी ने ही हमें सपने द्वारा संकेत दिया है।

पति ने स्वीकृति दी। बड़े बेटे को ननंद के घर रख कर हेमा पति के साथ उसी दिन मैसुर जाने के लिए निकल पड़ी। मैसुर पहुँचते ही दोनों वृंदावन गार्डन में गये और व्याकुलता से अपने बच्चे को ढूंढ़ने लगे। मन में **'जय माँ लक्ष्मी'** का रटन चालू था। और चमत्कार हुआ। सपने में हेमा ने जिस जगह बेटे को देखा था, वही जगह पर उसका बेटा उसके हमउम्र बच्चे के साथ खेल रहा था। उन दोनों बच्चों के नजदीक एक दंपति बैठे थे। वे चेहरे से मद्रासी लगते थे।

हेमा ने दौड़कर अपने बच्चे को गोद में उठा लिया और छाती से चिपका कर रोने लगी। उसका बेटा भी घबरा कर रोने लगा। वह

मद्रासी दंपति भी स्तब्ध बन कर खड़े हो गये। हेमा के पति ने हेमा को सांत्वना देकर चुप कराया। फिर वह मद्रासी दंपत्ति को बताया कि यह बच्चा उसका है, वह कहाँ खो गया था, उसे किस-किस रीत से ढूंढ़ा और पेंपर के कटिंग भी दिखाये।

मद्रासी दंपत्ति ने भी कहा कि यह बच्चा वे लोग कुंभ स्नान करने गये थे तब ट्रेन में से मिला था। बच्चा ट्रेन में किस तरह आया वह उनको मालूम नहीं था। पर बच्चा बहुत रोता था। अत: वे लोग उसे अपने साथ मैसुर ले आये। और अपने बच्चे की तरह पालते थे।

फिर जरुरी कार्यवाही करके, मद्रासी दंपति को बहुत-बहुत धन्यवाद देकर हेमा और उनका पति अपने बेटे को घर ले आये। घर में फिर से सुख का सागर लहराने लगा।

हेमा हर शुक्रवार शाम को कुछ न कुछ मीठा बनाकर माताजी को प्रसाद रखती। इस तरह इक्कीस शुक्रवार पूर्ण होते ही उसने भाव से उद्यापन किया और एक सौ एक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताबें बाँटी।

हेमा के पड़ोसी वगैरह सब माताजी के व्रत का यह चमत्कार देख कर दंग रह गयें।

ऐसा है **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का प्रभाव।

८. लड़की की शादी हुई

राधा बहन की सुनार ज़ाति में ज्यादातर स्त्रियां गौरवर्ण की और रूपवान। पर राधाबहन की बेटी सोनाली थोड़ी श्याम थी। ऊपर से पति की स्थिति भी साधारण। बड़ा दहेज देने की शक्ति उसमें न थी। सोनाली ग्रेजुएट हो गई थी, पर उसकी शादी नहीं हो रही थी।

धीरे-धीरे आयु बढ़ने लगी। अतः माता-पिता की चिंता भी बढ़ने लगी। सोनाली खाना पकाने में और इतर प्रवृत्तियों में कुशल थी। स्वभाव से भी सयानी थी। पर शादी की बात में पीछे रह गई।

एक दिन सोनाली अपने कॉलेज फ्रेन्ड हिना से मिलने गई तो हिना एक किताब पढ़ रही थी। सोनाली ने पूछा, 'हिना, क्या पढ़ रही है?'

'वैभवलक्ष्मी व्रत' की किताब है। हमारी पड़ोसन लीनाबहन ने आज उद्यापन किया है तो सब को एक-एक किताब बाँटी थी।'

'मुझे दिखा?'

हिना ने सोनाली को किताब दी। किताब पढ़ते-पढ़ते सोनाली को हुआ, मैं भी यह व्रत करके देखूं। शायद मेरी शादी हो जाय।

सोनाली ने कहा, 'हिना, यह किताब मैं ले जाऊं?'

'क्यों? व्रत करने का विचार है?' हेमा ने हँस कर पूछा।

'हाँ! उमर बढ़ती जाती है, और दिल बैठ-सा जाता है।'

'तेरी बात सच्ची है। यह किताब तू ले जा।'

शुक्रवार को सवेरे-११ शुक्रवार की मन्नत मानकर सोनाली ने **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** करने का संकल्प किया और व्रत शुरु किया।

उसी रात उनके फुफाजी एक लड़के की बात ले कर आये। जाति में ख्यातनाम घराना.... धनवान... लड़का एम.एस.सी. पास था। सोनाली की फुफी ने सीधे लड़के के साथ ही बात चला कर सोनाली के गुण गाये थे। वह लड़का शांत स्वभाव की और होशियार लड़की के साथ शादी करने का इच्छुक था। जो उसके व्यापार में हाथ बँटा सके।

सोनाली तो यह बात सुन कर खुश-खुश हो गई।

अगले शुक्रवार को ही सादगी से सोनाली की शादी हो गई।

ऐसी है **'माँ धनलक्ष्मी'** की कृपा! **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का चमत्कार।

श्री महालक्ष्मी की स्तुति

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःख भंजनि ।१।
श्रैया प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्यहम ।
पतितो द्धारीणि देवी नमाम्यहं पुनः पुनः ।२।
वेदांस्त्वा संस्तुवन्ति ही शास्त्राणि च मुर्हुमुः ।
देवास्त्वां प्रणमन्तिही लक्ष्मीदेवी नमोऽस्तुते ।३।
नमस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनी ।
भुक्तिमुक्ति न लभ्यते महादेवी त्वयि कृपा विना।४।
सुख सौभाग्यं न प्राप्नोति पत्र लक्ष्मी न विधते।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाम्यहम ।५।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम् ।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भीड़भंजनी ।६।
विधेहि देवी कल्याणं विधेहि परमां श्रियम ।
विधावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मवन्तं जनं कुरु ।७।
अचिन्त्य रूप-चरिते सर्वशत्रु विनाशीनी ।
नमस्तेतु महामाया सर्व सुख प्रदायिनी ।८।
नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहम सुरेश्वरी ।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्यहं परमेश्वरी ।९।

साहित्य संगम के लिये
मुद्रक-प्रकाशक : जनकभाई नानुभाई नायक
मुद्रण स्थान : कुमकुम ओफसेट, केलापीठ, सुरत
प्रका.स्थान : साहित्य संगम, बावासीदी, गोपुरा, सुरत (गुजरात)

श्री लक्ष्मी महिमा

श्री वैभवलक्ष्मी व्रत में आरती करने के बाद यह श्लोक का पठन करने से शीघ्र फल मिलता है।

यत्राभ्यागवदानमान चरण पक्षालनं भोजन।
सत्सेवा पितृदेववार्चन विधिः सत्यंगवां पालनम्।।
धान्या नामपि सग्रहो न कलहश्चित्ता तृरूपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन गृहे निष्फला।।

भावार्थ

जहाँ मेहमान की आव-भगत करने में आती है... उनको भोजन कराया जाता है, जहाँ सज्जनों की सेवा की जाती है, जहाँ निरंतर भाव से भगवान की पूजा और अन्य धर्मकार्य किये जाते हैं, जहाँ सत्य का पालन किया जाता है, जहाँ गलत कार्य नहीं होते, जहाँ गायों की रक्षा होती है, जहाँ दान देने के लिये धान्य का संग्रह किया जाता है, जहाँ क्लेश नहीं होता, जहाँ पत्नी संतोषी और विनयी होती है, ऐसी जगह पर मैं सदा निश्चल रहती हूँ। इनके सिवा की जगह पर कभी कभार दृष्टि डालती हूँ।

आरती भगवती महालक्ष्मी जी की!

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ ओ३म्...
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ओ३म्...
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि पाता॥ ओ३म्...
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता॥ ओ३म्...
जिस घर में तुम रहती, सब सद्‌गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ओ३म्...
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ओ३म्..
शुभगुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ओ३म्..
महालक्ष्मी जी की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता॥ ओ३म्..

बोलो भगवती महालक्ष्मी की जय!

श्लोक

विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धते।
आर्त हंत्रि नमस्तुभ्यं समृद्धं कुरु मे सदा॥
नमो नमस्ते माहांमाय श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महां लक्ष्मि नमोस्तुते॥

श्री महालक्ष्मी यंत्र

यह 'महालक्ष्मी यंत्र' के नित्य दर्शन करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।